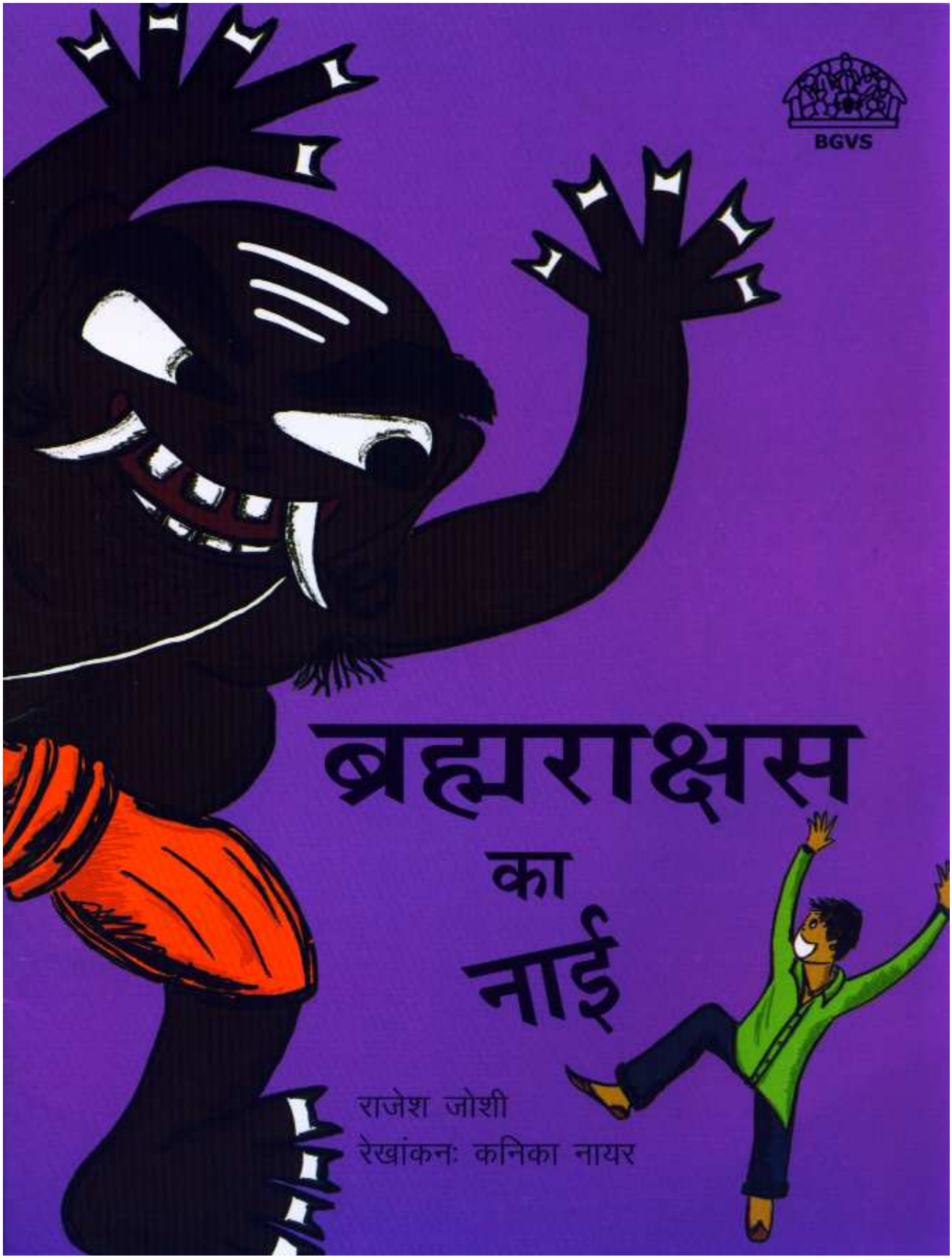
BGVS
ब्रह्मराक्षस
का
नाई
राजेश जोशी
रेखांकनः कनिका नायर

इस पुस्तक का प्रकाषन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन–पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

**ब्रह्मराक्षस का नाई** — **Brahmarakshas ka nai**

**बाल नाटक** — **Children's Play**
राजेश जोशी — Rajesh Joshi

**चित्रांकन** — **Illustration**
कनिका नायर — Kanika Nair

**पुस्तकमाला संपादक** — **Series Editor**
मनोज कुलकर्णी — Manoj Kulkarni

**प्रथम संस्करण** — **First Edition**
जनवरी, 2012 — January, 2012

**सहयोग राशि** — **Contributory Price**
40 रुपये — Rs. 40

**मुद्रण** — **Printing**
सन शाइन ऑफसेट — Sun Shine Offset
नई दिल्ली – 110 018 — New Delhi - 110 018

ISBN:- 978-93-81811-03-0
© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

**ज्ञान विज्ञान प्रकाशन**

**Publication and Distribution:**
Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvsdelhi@gmail.com. Website : www.bgvs.org

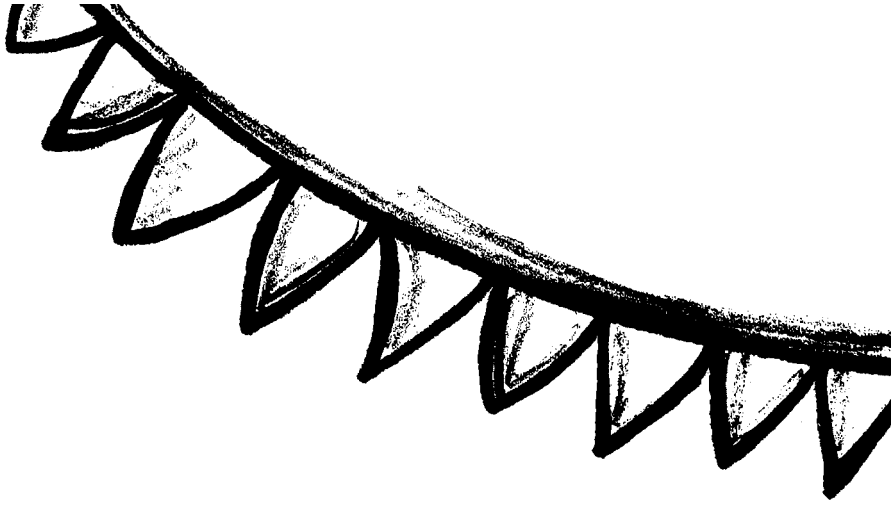

# ब्रह्मराक्षस का नाई

राजेश जोशी
रेखांकन: कनिका नायर

*पात्र:* नाई(एक आलसी आदमी), बूढ़ी मां, ब्रह्मराक्षस, दूसरा ब्रह्मराक्षस, नाई की पत्नी, गायक दल(मुखिया और टोली)

*दृश्य-एक*

(एक सोलह-सत्रह साल का लड़का एक पुराने से आईने के सामने खड़े होकर लगातार एक टूटे से कंघे से अपने बाल संवार रहा है। अलग-अलग एंगल से अपने को निहार रहा है। आईने के सामने तरह-तरह के मुंह बना रहा है। तभी एक मुख्य गायक और बच्चों की एक टोली का प्रवेष)

**मुख्य गायक :** हज्जाम एक था कभी अपने गाम में
लगता नहीं था मन जिसका किसी भी काम में।
मन लगता नहीं था जिसका किसी भी काम में
गिनती करेगा कोई क्या उसकी कौड़ी छदाम में।

**बच्चों की टोली:** काम का न काज का
दुश्मन अनाज का
उस पर उधार था
पैसा बजाज का

हजामत का हुनर न
न हुनर मसाज का
काम का न काज का
दुश्मन अनाज का

**मुख्य गायक :** बूढ़ी मां थी एक जो दिन रात कलपती रहती थी
डाँटती फटकारती फिर भी इस निकम्मे के वास्ते दिन भर खटती रहती थी।

जूं तक न रेंगती थी कभी उसके कान पे
आफत न आने देता था कभी अपनी जान पे
हज्जाम ऐसा एक था कभी अपने गाम में
लगता नहीं था मन जिसका किसी भी काम में
(बच्चे इस गाने के बीच नाई के पास जा-जाकर गाते हैं।)
(नाई अपना आईना और कंघा लेकर जगह बदलता रहता है। और उपेक्षा से उन लोगों के गाने को अनसुना करने का स्वांग करता है।)
(मुख्य गायक और बच्चों की टोली का प्रस्थान। एक बूढ़ी का हाथ में झाड़ू लेकर प्रवेश।)

**बूढ़ी :** निकम्मे, निखट्टू निकल यहां से ... आज से तुझे न रोटी मिलेगी न पानी। निकल घर से। काम करता है न काज... चार धेले का सहारा नहीं... मैं कब तक खट-खटकर तुझे रोटी खिलाती रहूंगी? जा और बाहर जाकर काम कर ...

आज के बाद जब तक काम न करे मुंह मत दिखाना...।
(झाड़ू से मारती है।)

**नाई :** देख ... बहुत हो गया ... अब रूक जा वरना...।

**बूढ़ी :** वरना, वरना क्या करेगा?
(एक झाड़ू और मारती है ।)

**नाई :** अब मारेगी तो सचमुच चला जाऊंगा ...।

**बूढ़ी :** जा न ... निकल यहां से ...।

**नाई :** मैं सचमुच चला जाऊंगा ... फिर वापस नहीं आऊंगा...।
(नाई का प्रस्थान)

**बूढ़ी :** मत आना...समझ लूंगी कि मैं निपूती ही थी... ऐसे निखट्टू के होने से तो बेऔलाद होना ही अच्छा...।
(बूढ़ी का बड़बड़ाते हुए प्रस्थान। नाई का प्रवेश)

**नाई :** (बड़बड़ाता है) इतना अपमान... अब इस घर में नहीं रहूंगा... जब तक धन नहीं कमाऊंगा इस घर में लौटकर नहीं आऊंगा ... रोटी खाऊंगा न पानी पिऊंगा ... इस घर की देहरी भी नहीं छुऊंगा। (जोर से चिल्लाकर) जा रहा हूं... अब लौटकर नहीं आऊंगा...।
(प्रस्थान)

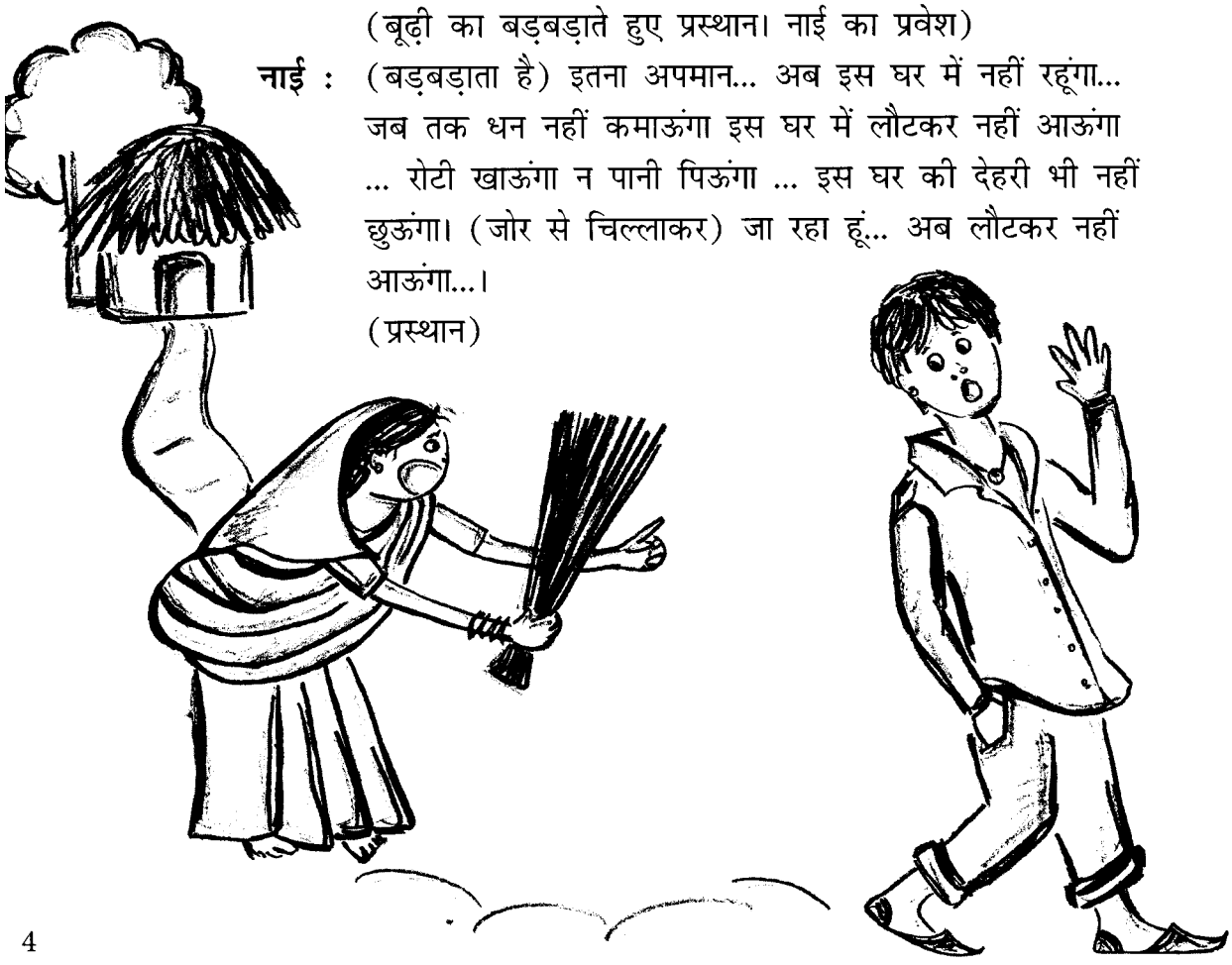

दृश्य–दो

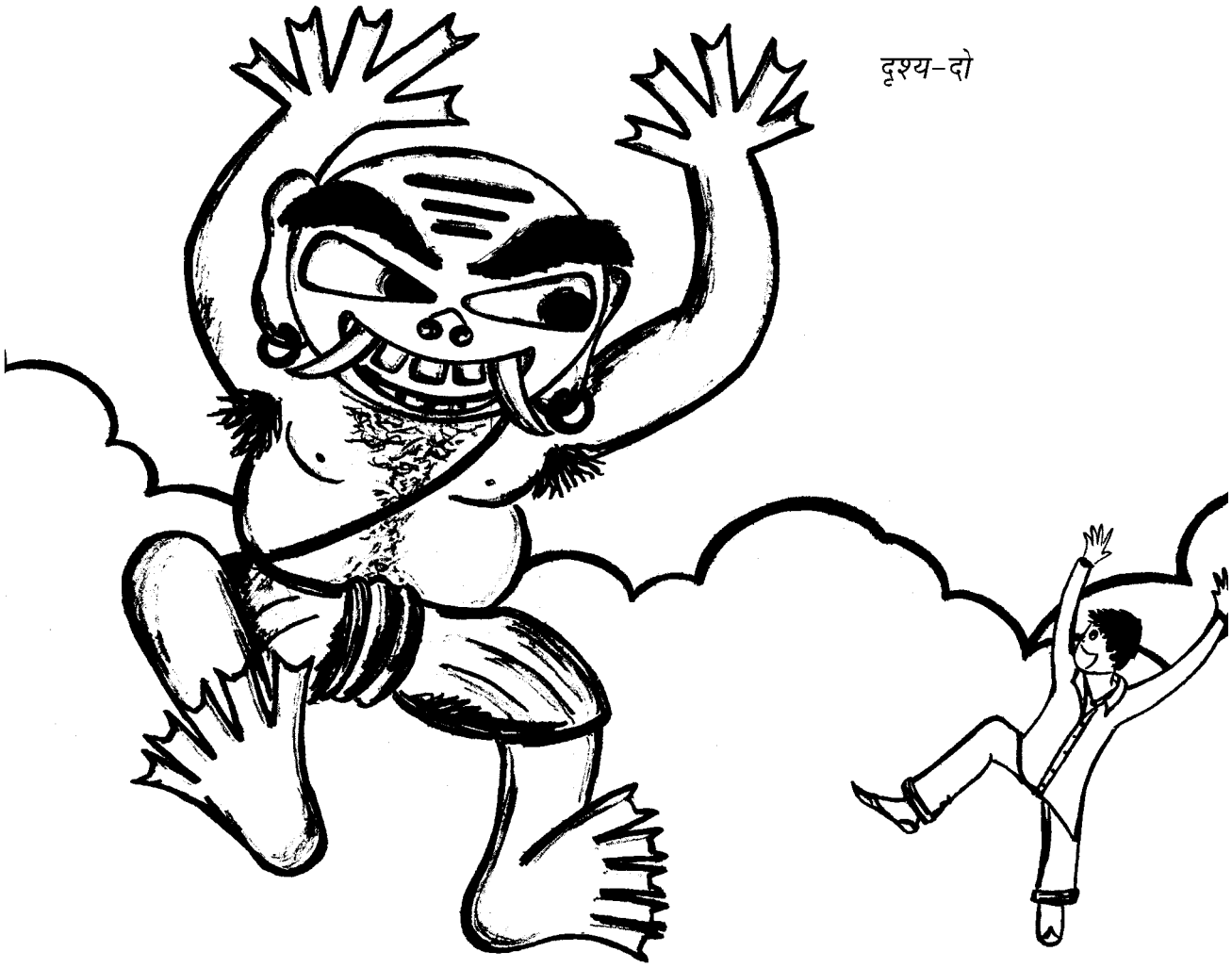



(जंगल का दृश्य। चांदनी रात का समय। रंग-बिरंगे वृक्षों के कटआउट लेकर बच्चे आते हैं। कुछ बच्चे हिरनों के मुखौटे लगाए जंगल के बीच कुलांचे भरते हैं। कुछ पक्षियों के मुखौटे लगाए उड़ने का अभिनय करते हैं। नाई इस दृश्य को थोड़ा घबराकर और बीच-बीच में मुग्ध भाव से देखता है। तभी एक ब्रह्मराक्षस का प्रवेश। नाई डरता है। पर डर को छिपाने की कोशिश करता है। ब्रह्मराक्षस नाई को देखकर खुश होता है और जोर-जोर से नाचने लगता है। नाई अपने डर को छिपाने के लिए राक्षस की ही तरह खुद भी नाचता है। दोनों एक दूसरे को आश्चर्य से देखते हैं)

**नाई :** तुम कौन हो?

**राक्षस :** मैं ब्रह्मराक्षस हूं ...ब्रह्मराक्षस।

**नाई :** (डरता है, पर डर को छिपाकर)।
ब्रह्मराक्षस! कमाल है ! तो ब्रह्मराक्षस ऐसे होते हैं?

**राक्षस :** ऐसे होते हैं से क्या मतलब है तुम्हारा?

**नाई :** मतलब ऐसे, जैसे तुम हो।

**राक्षस :** (डांटकर) मैं कैसा हूं?

**नाई :** ठीक हो... पर तुम पूरे कपड़े क्यों नहीं पहनते? तुम्हारे पास हैं नहीं या तुम ऐसे ही रहते हो?

**राक्षस :** (गुस्से में ) मैं ऐसे ही रहता हूं।

**नाई :** ओह तो तुम्हारे यहां यही फैशन है... चलो छोड़ों ... तुम तो यह बताओ कि तुम ब्रह्मराक्षस कैसे बन गए?

**राक्षस :** वो हुआ यूं कि पहले मैं एक ब्राह्मण था...। बहुत ज्ञानी था। मेरे पिता ने मुझे दूर-दूर तक अध्ययन करने भेजा। मैंने हर केन्द्र में जाकर मन लगाकर अध्ययन किया। और ज्ञानी हो गया। लेकिन लोग कहते हैं मैंने विद्या का असली मर्म नहीं सीखा।
(नाई बीच-बीच में 'अच्छा' कहकर हुंकारा भरता है)।

**नाई :** असली मर्म! वह क्या होता है ?

**राक्षस :** विद्या का असली मर्म है विनय... वह मैंने नहीं सीखा।

**नाई :** हूं, वह तो तुममें अभी भी नहीं है...।

**राक्षस :** (गुस्से में) चुप रहो, तुम बहुत बीच-बीच में बोलते हो। अब बोलोगे तो मैं कुछ नहीं बताऊंगा...समझे...।

**नाई :** ठीक है... ठीक है...बोलो... तुम बहुत जल्दी भड़क जाते हो।

**राक्षस :** तो ज्ञान का दम्भ मुझमें आ गया और मैं बाकी सबको मूर्ख समझने लगा। किसी को भी ज्ञान का पात्र नहीं मानता था। मैं एक योग्य शिष्य ढूंढ़ता रहा। पर मेरी अक्ल पर तो दम्भ का पर्दा पड़ा था, मुझे भला योग्य शिष्य कैसे मिलता ...? मैंने अपना ज्ञान किसी को नहीं दिया और एक दिन मैं वैसे ही मर गया... इसलिए मैं पिंशाच बना...(हंसता है) पर अब मैं एक

राक्षस हूं... ब्रह्मराक्षस।

**नाई:** पर तुम इतने खुश क्यों हो रहे हो और नाच क्यों रहे हो?

**राक्षस :** तुम तो लगता है निरे काठ के उल्लू हो... तुम इतना भी नहीं समझ सकते... एक राक्षस के लिए इस चांदनी रात में इससे ज्यादा खुशी की बात क्या हो सकती है कि उसे नरम-नरम मांस खाने को मिले... अब मैं तुम्हारा मांस खाऊंगा ... मैं सोच भी नहीं सकता था कि इस जंगल में ... इतनी रात गए किसी मनुष्य का मांस खाने को मिलेगा , मैंने कई दिन से किसी मनुष्य का मांस नहीं खाया...(हंसता है और फिर झूमकर नाचता है)

**नाई :** (हंसी उड़ाते हुए) तुम सचमुच बुद्धू हो... तुम्हारा ज्ञान न पिछले जन्म में तुम्हारे काम आया और न इस जन्म में ... तुममें तो रत्ती भर भी कॉमनसेन्स नहीं है...।

**राक्षस :** यह कॉमनसेन्स क्या होता है ?

**नाई :** (स्वगत) अब इसे छकाना चाहिए। (प्रकट) कामनसेन्स! अरे कॉमनसेन्स कॉमनसेन्स होता है।

**राक्षस :** लेकिन होता क्या है ?

**नाई :** (मुस्कुराता है) ओह! तुम्हें ज्ञान के इस सबसे सुन्दर फल के बारे में ही नहीं पता है तो तुम्हें फिर पता क्या है !...यह ज्ञान का सबसे खास फल है। तुम्हारे गुरूओं ने तुम्हें इस फल के बारे में ही नहीं बताया... कमाल है! लगता है तुम किसी के प्यारे शिष्य नहीं रहे। वरना ऐसा कैसे हो सकता है कि ज्ञान के इस फल के बारे में तुम्हें मालूम तक न होता। होता है, ऐसा भी होता है, हर गुरू एक न एक गुर अपने चेले से जरूर छिपा लेता है। बिल्ली ने जैसे शेर को पेड़ पर चढ़ना नहीं सिखाया... तुम्हारे गुरू ने तुमसे इस मुख्य ज्ञान को छिपा लिया। खैर... अब क्या हो सकता है...!

**राक्षस :** लेकिन तुम इतने खुश क्यों हो रहे हो?

**नाई :** अब यही तो बात है, तुममें कॉमनसेन्स होता तो तुम जान लेते।

**राक्षस :** फिर कॉमनसेन्स !

**नाई :** मेरा मतलब है तुम्हें खुश होने से पहले सोचना चाहिए था कि एक मनुष्य इतनी रात गए इस घने जंगल में... अकेला और निहत्था क्यों घूम रहा है...इसके बाद तुम्हें यह सोचना चाहिए था कि एक मनुष्य राक्षस को सामने देखकर भी डर क्यों नहीं रहा है? पर तुम सचमुच अकल से पैदल हो। तुमने एक मनुष्य देखा और सोच लिया कि तुम्हारे खाने का इंतजाम हो गया। ब्राह्मण हो न इसलिए खाने के अलावा कुछ सोच भी नहीं सकते। पेटू आदमी ज्ञानी हो या ज्ञानी आदमी पेटू दोनों ही बेकार...।
(बीच-बीच में राक्षस हुंकारा भरता है और मुंडी हिलाता है)।

**राक्षस :** पहेलियां मत बुझाओ... देखो अब मुझे गुस्सा आ रहा है। सीधे-सीधे बताओ वरना...।

**नाई :** वरना क्या? वरना तुम मुझे खा जाओगे...?

**राक्षस :** हां...।

**नाई :** चलों बता ही देता हूं तुम भी क्या याद रखोगे कि एक मनुष्य

से पाला पड़ा था, तो तुम यह जानना चाहते हो कि मैं क्यों खुश हो रहा था?

**राक्षस :** (गुस्से में चीखकर) हां मैं जानना चाहता हूं।

**नाई :** तो सुनों मैं भी नहीं चाहता कि आगे भी तुम प्रेतयोनी में ही भटकते रहो। सच बात यह है कि हमारे देश का राजकुमार सख़्त बीमार है। तरह-तरह के इलाज किए पर कोई फायदा नहीं। दूर-दूर से हकीम आए, वैद्य आए। लेकिन महीनों गुजर गए, रोग किसी की पकड़ में ही नहीं आता था...।

**राक्षस :** (गुस्से में) ओह ! बकवास बंद करो, इसमें और तुम्हारे नाचने में क्या संबंध है ?

**नाई :** तुम भी यार कितने बेसब्र किस्म के राक्षस हो, पूरी बात सुनते नहीं और चीखने लगते हो। दूर-दूर से आए चिकित्सकों ने राजकुमार को देखा और एक ही नतीजे पर पहुंचे ...।

**राक्षस :** किस नतीजे पर ?

**नाई :** इस नतीजे पर कि अगर राजकुमार को एक सौ एक ब्रह्मराक्षसों के हृदय का रक्त पिलाया जाए तो वह ठीक हो सकता है...।

(नाई किस्से सुना रहा है। राक्षस सुन रहा है और सोच भी रहा है। तभी मुख्य गायक और बच्चों की टोली का प्रवेश होता है।)

**मुख्य गायक - और टोली :**

किस्से गढ़ने में हज्जाम बहुत उस्ताद था
बचपन में सुना हर किस्सा उसे जबानी याद था
अक़्ल घूमती थी उसकी फिरकनी की तरह
और जबान चलती थी कतरनी की तरह
और राक्षस उसकी बातों में कैद हुआ जाता था
मन-ही-मन मगर उसको गुस्सा भी बहुत आता था।
रात तारों के बिछौने पे अभी सोती थी
बात हज्जाम की मगर खत्म नहीं होती थी।

**टोली :** फिर-फिर क्या हुआ ?

**राक्षस :** (गुस्से में) तो ?

**नाई :** राजा ने सारे राज्य में मुनादी पिटवाई है कि...।

**मुख्य गायक :** हर खासो आम को। सुबह को और शाम को। यह इत्तिला दी जाती है कि जो भी शख्स एक सौ एक ब्रह्मराक्षसों के हृदय का रक्त लाकर राजकुमार की दवा के लिए देगा उसे राजा आधा राज्य दे देगा और अपनी सुन्दर राजकुमारी से उसका विवाह कर देगा...।

**नाई :** (राक्षस से) यकीन करो मैंने सौ ब्रह्मराक्षसों को पकड़ लिया है बस एक की कमी है... तुम्हें मिलाकर एक सौ एक की गिनती पूरी हो जाएगी...।

**राक्षस :** (जोर-जोर से हंसता है) तुम्हें क्या लगता है कि तुम मुझे पकड़ लोगे?

**नाई :** (स्वगत) अरे मेरा वह छोटा-सा आईना कहां है ?
(बार-बार अपनी अलग-अलग जेबों में हाथ डालकर तलाश करता है। फिर एक जेब से एक छोटा-सा आईना निकालकर उसे अपनी मुट्ठी में ले लेता है।)
(प्रकट) हां... पकड़ लूंगा नहीं, मैंने तो तुम्हें पहले ही पकड़ लिया है। तुम्हारी आत्मा को मैंने कैद कर लिया है। अब तुम्हारी आत्मा मेरी मुट्ठी में है । विश्वास नहीं हो रहा है तो बताऊं...?

**राक्षस :** (डरकर) बताओ?
(नाई मुट्ठी में बंद आईने में राक्षस को दिखाता है। राक्षस उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखकर घबरा जाता है।)

**राक्षस :** (घबराकर) यह तो मैं हूं। यह तुमने कैसे किया? तुम बहुत धूर्त हो... मुझे बातों में लगाकर तुमने मेरी आत्मा को चुरा लिया है। यह गलत बात है, मेरी आत्मा मुझे वापस करो।

**नाई :** अच्छा! जिससे तुम मुझे खा जाओ। अब तुम कुछ नहीं कर सकते। अब मैं तुम्हें ले जाकर राजा को सौंप दूंगा और ईनाम पाऊंगा ...।

**राक्षस :** (डरता है। गिड़गिड़ाता है।) देखो मुझे माफ कर दो। मैं कसम खाता हूं मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा... मैं तो यूं ही तुम्हें डरा रहा था...मेरा पेट तो पहले से ही भरा हुआ है। मैं तो पहले ही तय कर चुका हूं कि मैं कभी मनुष्य का मांस नहीं खाऊंगा...

**नाई :** यह नहीं हो सकता... तुम्हे छोड़ दूंगा तो मेरा तो बहुत नुकसान हो जायेगा । मैं एक गरीब आदमी हूं... इतना अच्छा मौका, भला मैं कैसे छोड़ दूं, तुम्हीं सोचो?

**राक्षस :** तुम्हारा कोई नुकसान नहीं होगा। राजा तुम्हें क्या देगा, सिर्फ आधा राज्य न ?... मैं तुम्हें सात रियासतों के बराबर धन दे सकता हूं। मुझे छोड़ दो... मैं वादा करता हूं कि मैं इस जंगल को छोड़कर चला जाऊंगा।

**नाई :** तुम क्या मुझे बुद्धू समझते हो? इस जंगल में धन कहां से आएगा और आ भी गया तो इतने सारे धन को मैं अपने घर तक ले कैसे जाऊंगा।

**राक्षस :** इसकी फिक्र मत करो। खजाना तो यहीं तुम्हारे पीछे जो पेड़ है उसी के नीचे दबा हुआ है। आओ मैं तुम्हें दिखाता हूं ....?
(पीछे खड़े पेड़ को धक्का देकर हटाता है। उसके नीचे से धन से भरा कलश निकलता है। नाई धन देखकर खुश होता है।)

**नाई :** इसे मेरे घर कैसे पहुंचाओगे?

**राक्षस :** मेरी शक्ति में विश्वास करो, मैं पलक झपकते ही इसे तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा...।

(बच्चों की टोली का प्रवेश। राक्षस धन का घड़ा उठाता है और बच्चों की टोली उड़ने वाले विमान की आकृति बनाती है। राक्षस और नाई उसमें सवार होते हैं। उड़ने का अभिनय करते हुए मंच पर एक-दो चक्कर लगाकर सबका प्रस्थान।)

*दृश्य तीन*

(मुख्य गायक और टोली का प्रवेश)।

**मुख्य गायक :** धन सारा राक्षस ने उसके घर पहुंचाया
हज्जाम ने उससे एक नया घर बनवाया
फिर एक दिन उसने ब्याह रचाया
सुन्दर सी एक बहू वह घर में लाया।
सुविधा का हर सामान जुटाया
राक्षस था लेकिन अब भी घबराया
बोला मुझको अब मुक्ति दे दो
अब नहीं कोई भी कर्ज़ बकाया

**टोली :** नाई ने सोचा लेकिन
इतनी जल्दी इसको मुक्ति देना ठीक नहीं है
और बकाया कामों को भी निपटा लेना अच्छा होगा
इतनी जल्दी मुक्ति देना ठीक नहीं है ।
(राक्षस नाई के आगे हाथ जोड़कर मुक्ति के लिए विनती करता है)

**नाई :** देखो मेरे खेतों में फसल तैयार खड़ी है और मुझे अभी कई काम हैं। तुम उस फसल को काटकर खलिहान में रख दो इसके बाद ही मैं तुम्हें मुक्त करूंगा...।

**राक्षस :** लेकिन ...?

**नाई :** लेकिन, वेकिन कुछ नहीं... शुक्र मनाओं कि मैं तुम्हें राजा के हवाले नहीं कर रहा हूं।
(राक्षस सिर झुकाए जाता है। नाई मुस्कुराता है।)

**मुख्य गायक :** मरता क्या न करता राक्षस ने सिर झुकाया और खेत पर काम करने चल दिया। इसी बीच एक दिन क्या हुआ...?

**टोली :** क्या हुआ भाई क्या हुआ?
कैसी थी चौपड़ और कौन-सा जुआ
क्या हुआ भाई क्या हुआ?
क्या बिल्ली को ले गया सुआ
क्या हुआ भाई क्या हुआ?
आगे की कहानी में क्या हुआ
नानी बताए न बताए बुआ?

चूल्हे में आगी न आग में धुंआ
क्या हुआ भाई क्या हुआ?

*दृश्य चार*

(नाई का घर। अचानक घर के अन्दर से बरतन गिरने और एक औरत के चिल्लाने की आवाज़ें आती हैं)।

**नाई :** अरे क्या हुआ? इतना शोर क्यों मचा रखा है ?

(नाई की पत्नी चिल्लाती हुई और हाथ में एक बड़ी-सी कटार लिए आती है।)

**नाई :** अरी भागवान, यह तुम किस दुश्मन का सिर काटने जा रही हो ?

**नाई की पत्नी :** तुम जो मछली लाए थे, बिल्ली उसका सिर लेकर भाग गई। मैं इस बिल्ली को नहीं छोड़ूंगी... तंग कर डाला इस काली बिल्ली ने... आज मैं उसे जरूर मजा चखाऊंगी... आज उसकी गरदन नहीं बचेगी...।

**मुख्य गायक :** तो नाई की बीवी कटार लेकर बिल्ली की गरदन नापने के लिए अपने घर की खिड़की पर घात लगाए खड़ी हो गई...।

**टोली :** फिर ...?

*दृश्य पांच*

(खेत का दृश्य। ब्रह्मराक्षस काम करने के लिए हंसिया हाथ में लेकर आगे बढ़ता है।)

**ब्रह्मराक्षस :** (स्वगत) यह मालिक तो साला बहुत लालची है। इतना सारा धन दे दिया तब भी तंग कर रहा है। जी में तो आता है इसका सिर चबा जाऊं पर पता नहीं कैसे साले ने मेरी आत्मा को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया... किसी तरह इससे मुक्ति पाऊं तो फिर इस जंगल में कभी नहीं आऊंगा...। अब इतना बड़ा खेत काटना... उफ मेरे बाप-दादों ने भी कभी खेती का काम नहीं किया... लेकिन इसे तो निपटाना ही पड़ेगा...।

(सामने से एक दूसरा ब्रह्मराक्षस आता है)

**दूसरा राक्षस :** (पहले राक्षस से) यह तुम क्या कर रहे हो? राक्षसो ने यह खेती-बाड़ी करना कब से शुरू कर दिया?

**पहला राक्षस :** क्या बताऊं यार... मैं एक बहुत लालची और शातिर मनुष्य के चक्कर में फंस गया हूं। उसने पता नहीं कैसे मेरी आत्मा को बंदी बना लिया और अब मुझे उससे मुक्ति पाने के लिए यह सब करना पड़ रहा है...।

**दूसरा राक्षस :** (हंसता है) तुम कैसे ब्रह्मराक्षस हो! उस मनुष्य ने तुम्हें जरूर बुद्धू बना दिया है। अरे मनुष्य भी कहीं राक्षस से ज्यादा शक्तिशाली हो सकता है। आदमी की औकात ही क्या है जो हमें पराजित कर सके...मुझे जरा उस आदमी का घर दिखाओं ... मैं देखता हूं कैसे वह हम राक्षसों से काम करा सकता है...?

**पहला राक्षस :** दिखा तो दूंगा लेकिन दूर से। यह खेत काटे बिना उसके पास जाने की हिम्मत मुझमें नहीं है। उसने वादा किया है कि खेत कटते ही वह मेरी आत्मा को मुक्त कर देगा... तुम्हारे चक्कर में अगर उसने फिर कोई काम बता दिया तो मैं व्यर्थ ही मारा जाऊंगा।

(पहला और दूसरा राक्षस एक चक्कर काटते हैं। पहले वाला दूसरे राक्षस को नाई का घर दिखाता है। नाई के घर की खिड़की खुली हुई है। खिड़की के पीछे छिपकर नाई की पत्नी हाथ में कटार लिए खड़ी है। पहले राक्षस का प्रस्थान दूसरा राक्षस दबे पांव खिड़की के पास आता है।)

**नाई की पत्नी :** (हाथ में कटार लिया स्वगत) आज मैं इस बिलइया को नहीं छोड़नेवाली... बस एक बार और अन्दर आ जाए तो आज मैं उसका काम तमाम कर डालूं ...।

(दूसरा राक्षस अपना झबरा सिर धीरे-से खिड़की के अंदर घुसाता है और पत्नी तेजी से कटार से वार करती है। सिर तो बच जाता है पर राक्षस की नाक कट जाती है। लहूलुहान ब्रह्मराक्षस 'मार डाला...मार डाला...' चीखते हुआ भागता है। प्रस्थान)।

**मुख्य गायक :** इस तरह अपनी नाक खोकर भागा यह दूसरा ब्रह्मराक्षस पहले वाले ब्रह्मराक्षस के पास भी नहीं लौटा और दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ।

**टोली :** अगड़म बगड़म बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा तागा
वो दुम दबाकर भागा
वो दुम दबाकर भागा
वो दुम दबाकर भागा
(पहले वाले राक्षस का प्रवेश )

**राक्षस :** मालिक मैंने पूरा काम निपटा दिया है। फसल खलिहान में पहुंचा दी है अब तुम भी अपना वादा पूरा करो और मुझे मुक्ति दे दो।

**नाई :** (मुस्कुराता है। जेब से आईना निकालता है) तुम भी क्या याद रखोगे कि एक वादे के पक्के आदमी से तुम्हारा पाला पड़ा है। (आईने को उल्टा करके उसकी लाल वाली तरफ से राक्षस को दिखाता है।)
देखो अब इसमें तुम्हारी आत्मा नहीं है। मैंने तुम्हें मुक्त किया। (राक्षस खुश हो जाता है। प्रस्थान)।

**टोली:** राक्षस को इस तरह
बुद्धू बनाया हज्जाम ने
**मुख्य गायक :** आईना उलटकर दिखला दिया
शैतान ने
फिर एक बात बोली
धीरे-से उसके कान में
अब भाग यहां से
किसी और गाम में।
अब नज़र न आना कभी
इस मुकाम में।
(सब गाते हैं)
हज्जाम एक था कभी अपने गाम में
लगता नहीं था मन जिसका किसी भी काम में।

किस्सा यह बयां हमने किया
सबके सामने।
हज्जाम एक था कभी अपने गाम में।

*आर.के. रामानुजन द्वारा संकलित 'भारत की लोककथाएं' में से एक बंग्ला लोक कथा पर आधारित।*

**राजेश जोशी** – हिंदी के वरिष्ठ और चर्चित कवि। कविताओं, कहानियों, नाटकों आदि की अनेक पुस्तकें प्रकाशित। साहित्य अकादमी सहित अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित। साहित्यिक, सांस्कृतिक आंदोलनों में सक्रिय हिस्सेदारी। भोपाल में रहते हैं।
**कनिका नायर** – पर्ल अकादमी ऑफ फैषन, नई दिल्ली से कम्युनिकेषन डिजाईन की स्नातक उपधि। बच्चों की पुस्तकों के लिए रचनात्मक चित्रांकन और लेखन में गहरी रुचि। जयपुर में रहती हैं।

## भारत ज्ञान विज्ञान समिति

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर–बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है।देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है।

आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए संगठन लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्पूर्ण योगदान है। जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी–विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई है। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन–जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति